BA 2, Paper-4
Systems of Psychology
Topic -" contribution of Kardiner"
By - Bakhteyar Fatmi

Scanned with CamScanner

Ques:- Explain the contribution of Abram Kardiner as a Neo-Freudian.

Ans:- मनोवैज्ञानिकों का एक समूह ऐसा है जो Freud के यहाँ प्रशिक्षित हुए और बाद में विशेषकर Freud की मृत्यु के बाद उनके सिद्धान्तों एवं विचारों का विरोध किया। परन्तु इनके विरोध का स्वरूप ADLER तथा JUNG के समान नहीं था जिन्होंने Freud से अपना नाता पूर्णतः तोड़कर नए मनोविज्ञान की स्थापना की थी। ऐसे मनोवैज्ञानिक अपने को Freud के धारार्थ का ही मानते हैं परन्तु Freud के विचारों एवं संप्रत्ययों में काफी संशोधन किया। इन्होंने स्पष्ट किया कि Freud ने अपने विचारों में जैविक कारकों को सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों की कीमत पर अनावश्यक ढंग से काफी उछाला। इनलोगों के अनुसार सच्चाई यह है कि मानव व्यवहारों पर सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का भी काफी प्रभाव पड़ता है। अतः इसकी व्याख्या में इन लोगों द्वारा इन कारकों के प्रभावों का भी विश्लेषण किया गया है। ऐसे लोगों को नव-फ्रायडवादी (Neo-Freudian) की संज्ञा दी गई है।

नव-फ्रायडवादी के रूप में Horney, Fromm एवं Sullivan के अतिरिक्त Kardiner (कार्डिनर) का नाम उल्लेखनीय है।

Kardiner ने व्यक्तित्व के विकास पर संस्कृति एवं वातावरण पर विशेष बल दिया। WOLMAN ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में लिखा है कि —

"The Neo-Freudian Kardiner was primarily interested in learning how a specific society acquires adaptation with respect to its own environment." Kardiner ने अभिवृत्तियों एवं मूल्य (values) को 'प्रक्षेपण प्रणाली' (Projective System) के नाम से पुकारा। इसने Freud के समान ही कहा कि मनुष्य के जीवन में प्रक्षेपण प्रणाली का निर्माण जीवन के पूर्वकालीन वर्षों में ही हो जाता है। इस प्रकार बचपन के पूर्वकालीन वर्षों का लालन-पालन का व्यक्ति के व्यक्तित्व पर अमित प्रभाव पड़ता है। माता-पिता का स्वभाव, उनकी संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवाज आदि से बालक का व्यक्तित्व काफी प्रभावित होता है। समाज का प्रभाव भी बच्चे पर अधिक पड़ता है। माता-पिता का स्वभाव भिन्न हो सकता है, परन्तु समाज सबके लिए एक समान होता

Scanned with CamScanner

है। अतः समाज व्यक्तियों में व्यक्तित्व संरचना (Personality confi-guration) का विकास करता है। सामाजिक समानता के कारण प्रत्येक समाज के व्यक्तियों का व्यक्तित्व अलग-अलग होता है। एक समाज के व्यक्ति अन्य समाज के व्यक्तियों से अलग होते हैं। एक समाज के अनुभव जो व्यक्तित्व के आधार होते हैं, समान होते हैं। अनुभवों की समानता के कारण ही व्यक्तित्व में समानता पाई जाती है। समान अनुभव, समान व्यक्तित्व का विकास करते हैं। इसलिए Kardiner ने इन्हें 'आधारभूत व्यक्तित्व प्रकार' (Basic Personality types) कहा है।

Kardiner ने संस्कृति (culture) के सम्बन्ध में कहा कि संस्कृति उन व्यक्तियों के समूह से गठित होती है जिनके विचार तथा व्यवहार साधारणतया स्वीकृत होते हैं। इन व्यवहारों एवं विचारों की प्रणाली ही संस्थाएं कहलाती हैं। संस्था से अलग होने पर अनेक बाधाएं उपस्थित हो जाती हैं। अर्थात संस्कृति से बाहर जाने पर अशान्ति, बाधा तथा रुकावट पैदा होते हैं। विश्व में अनेक संस्कृतियाँ हैं तथा प्रत्येक संस्कृति में अनेक संस्थाएं हैं। परन्तु विभिन्न संस्कृतियों में भी ऐसी संस्थाएं होती हैं जो समान होती हैं। ये समान संस्थाएं मनुष्यों की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। Kardiner ने स्वीकार किया कि पालन-पोषण की अवधि विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग है लेकिन पालन-पोषण होता तो सभी में है। Wolman ने कहा कि विवाह संस्थाएं सभी संस्कृतियों में हैं, पर कितने विवाह हों, कैसे हों - इत्यादि बातें अलग हो सकती हैं।

दूसरी बात Kardiner ने संस्कृति एवं संस्था के सम्बन्ध में यह कही कि संस्कृति एवं संस्थाएं मानव द्वारा निर्मित हैं, मानव ही इसका जन्मदाता, वाहक और संचालक होता है। एक संस्कृति का व्यक्ति संस्कृति की संस्थाओं के सम्बन्ध में दूसरे व्यक्तियों से सीखता है। इस प्रकार मनुष्य पर संस्था तथा संस्कृति का अमिट प्रभाव पड़ता है। उन्होंने संस्कृति तथा संस्थाओं के मानव पर पड़ने वाले प्रभाव की खोज करने की कोशिश की। उन्होंने यह भी जानने का प्रयास किया कि संस्थाएं मानव आवश्यकताओं को किस प्रकार पूरा करती हैं? इसके लिए Kardiner ने अनेक संस्कृतियों की अनेक संस्थाओं का अध्ययन किया एवं प्रेक्षण विधि तथा जीवन इतिहास विधि का प्रयोग किया और अध्ययन परिणाम के आधार पर Kardiner ने Freud से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

Kardiner ने अपना अध्ययन मनोविश्लेषण से प्रारम्भ किया परन्तु उनके परिणाम मनोविश्लेषणात्मक नहीं थे। उन्होंने अनेक संस्कृतियों के व्यक्तियों का अध्ययन किया और पाया कि व्यक्तित्व निर्माण में विकास अवस्थाएं महत्वहीन होती हैं, व्यक्तित्व निर्माण पर वातावरण का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार व्यक्तित्व निर्माण में Kardiner के अनुसार सामाजिक-आर्थिक तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। Kardiner ने विकास अवस्थाओं के स्थान पर सामाजिक एवं भौतिक वातावरण के प्रति समायोजन अधिक महत्वपूर्ण बतलाया। इसी तथ्य के कारण ROHEIM ने इसके सम्बन्ध में कहा कि Kardiner आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक निर्धारकों के मध्य घूमता रहा। लेकिन WOLMAN ने रोहीम के कथन का विरोध करते हुए कहा कि Kardiner इन दोनों के मध्य घूमता नहीं रहा बल्कि उसके विचार पूर्णतया स्पष्ट तथा ठोस है। Wolman ने इसे एक उदाहरण देते हुए कहा कि Kardiner ने काम मूलप्रवृति (Sex instincts) को पूर्णतया स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है। Kardiner के अनुसार काम मूल-प्रवृति में तीन लक्षण स्पष्ट होते हैं—

(i) कामेच्छा की पूर्ति स्थगित हो सकती है।
(ii) कामेच्छा-शक्ति की धारा अन्यत्र प्रवाहित की जा सकती है।
(iii) काम-वासना की पूर्ति अन्य साधनों से भी सम्भव है।

लेकिन भोजन की आवश्यकता को हम स्थगित नहीं कर सकते, न इसकी पूर्ति भोजन के अलावा अन्य साधनों से की जा सकती है तथा इसकी धारा भी अन्यत्र प्रवाहित नहीं हो सकती।

Kardiner ने कहा कि अधिकतर संस्कृतियों में भोजन का अत्यंत महत्व है। इसका अनेक संस्कृतियों पर अमिट प्रभाव पड़ा है। संस्कृतियों पर भोजन के प्रकार, खाने के समय एवं खाने की विधि – तीनों का ही प्रभाव पड़ता है। भोजन मानव-व्यवहार पर प्रभाव डालता है। भोजन का प्रभाव व्यक्तित्व पर पड़ता है, ~~व्यक्तित्व~~ व्यवहार पर पड़ता है। इस तथ्य को भारतीय दर्शन भी स्वीकार करता है। सत, रज तथा तम गुण मानव-व्यवहार में केवल भोजन के ही कारण उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार Kardiner का यह सिद्धान्त भारतीय दर्शन के अनुसार ही है। भोजन के अतिरिक्त Kardiner ने कहा कि आर्थिक दबाव भी व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। परन्तु आर्थिक दबाव की एक

Scanned with CamScanner

निश्चित मात्रा विभिन्न संस्थाओं पर एक सा प्रभाव रखती हैं, ऐसी बात नहीं। एक स्वभाव का प्रभाव पृथक-पृथक होता है।

Kardiner ने Freud के Oedipus complex के अवधारणा में कहा कि यह कोई विश्वव्यापी (universal) सत्य नहीं है। Kardiner ने कहा कि मार्कीसन समाज में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या अधिक है। स्त्रियाँ पुरुषों से संख्या के कारण बलशाली हैं। अत: पुरुषों को गृहस्थी का वह सारा कार्य करना पड़ता है जो और समाज में स्त्रियाँ करती हैं। यहाँ पर पुत्र अपनी माँ से विरोध करने लगता है क्योंकि वह उससे उसके पिता को, जो उसकी देखभाल करता है तथा खाना देता है, छीन लेती है। अत: Oedipus ग्रन्थि निराधार है। इस प्रकार Kardiner ने Oedipus complex का पुरजोर विरोध किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि Kardiner ने व्यक्तित्व एवं व्यवहार के क्षेत्र में संस्कृति, समाज, पालन-पोषण के प्रभावों पर अधिक बल दिया। Freud के Oedipus complex को तो सिरे से नकार दिया लेकिन चेतना, पूर्वचेतना तथा अचेतना को ठीक उसी प्रकार गले लगाया जैसा Freud ने प्रतिपादित किया। अन्त में WOLMAN के ही शब्दों में हम कह सकते हैं कि —

"Although little read today, Abram Kardiner (1891–1981) was one of the founding figures of the culture and Personality School of Anthropology."

12/5/2020